जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

निन्दा की आँच जिसे पिघला भी नहीं पाती, प्रशंसा की ठंडक उसे छार-छार कर देती है।

- बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ - 26

वर्ष : 26, अंक : 6 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (द्वितीय) 2003 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25/-, एकप्रति : 2/-

बाल शिक्षण-शिविर सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा पंचबालयति एवं विहरमान 20 तीर्थंकर जिनालय, साधनानगर में दिनांक 1 जून से 8 जून तक जैनत्व बाल संस्कार शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित अशोकजी मांगुलकर, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित ऋषिराजजी शास्त्री, पण्डित राजीवजी शास्त्री, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री, पण्डित जिनेशजी, पण्डित अनुजजी, पण्डित अमितजी, श्रीमती आशाजी एवं श्रीमती ममताजी द्वारा बालबोध पाठमाला भाग-1, 2, 3 एवं वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग- 1, 2 की कक्षा ली गई।

ज्ञातव्य है कि शिविर में 550 विद्यार्थियों ने भाग लिया जिन्हें विभिन्न स्थानों पर 10 कक्षाओं में विभाजित करके पढ़ाया गया।

बाल कक्षाओं के अतिरिक्त युवाओं के लिये लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा ली गई।

प्रतिदिन प्रात: पण्डित बाबूभाई फतेहपुर एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के प्रवचन हुये। सायंकाल पहला प्रवचन पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर व पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा का तथा द्वितीय प्रवचन पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर व ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद का हुआ।

शिविर में सभी बालकों को श्री कीर्तिभाई सेठ कलकत्ता की ओर से 3 पुस्तकों का एवं श्री अनंतभाई सेठ मुम्बई की ओर से 2 पुस्तकों का सैट वितरित किया गया।

समापन समारोह के अवसर पर श्री आर.के जैन उत्कर्ष विहार तथा श्री इन्दरमलजी सौगाणी के सान्निध्य में उत्तीर्ण छात्रों को सर्टिफिकेट तथा तीन-तीन पुस्तकों के सैट प्रदान किये गये।

ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री मनोहरलालजी काला एवं महामंत्री श्री अशोकजी बड़जात्या ने ट्रस्ट की गतिविधियों की जानकारी दी। शिविर के प्रमुख संयोजक श्री विजयजी बड़जात्या ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। आभार प्रदर्शन श्री राजेन्द्रजी पहाड़िया।

इसी समय आगामी वर्ष में 2 मई से 9 मई 2004 तक शिविर लगाने की घोषणा भी की गई। **- पूनमचन्द छाबड़ा**

वैराग्य समाचार -

1. वयोवृद्ध विद्वान प्रकाशचन्दजी 'हितैषी' नहीं रहे

प्रसिद्ध समाजसेवी, कुशल वक्ता, आध्यात्मिक एवं वयोवृद्ध विद्वान, श्री अखिल भारतवर्षीय दिग. जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष, सन्मति सन्देश (मासिक) पत्रिका के संपादक पण्डित प्रकाशचन्दजी 'हितैषी' का दिनांक 7 जून 2003 को देहावसान हो गया है।

आपकी स्मृति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट परिवार, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय एवं दैनिक स्वाध्याय सभा द्वारा दिनांक 8 जून को टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में शोक सभा आयोजित की गई।

आप अत्यन्त सुलझे हुये विचारों के तथा समन्वयवादी विचारधारा को माननेवाले थे। आप सदैव आगम को सर्वोपरी रखकर समाज को संगठित करने के पक्षधर रहे हैं।

आपके निधन से जो अपूरणीय क्षति हुई है उसकी पूर्ति निकट भविष्य में संभव नहीं है। हम सभी आपके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रगट करते हुये कामना करते हैं कि दिवंगत आत्मा शीघ्र ही पूर्णता को प्राप्त करे।

2. लन्दन निवासी श्री भगवानजी कचराभाई शाह के बड़े सुपुत्र **सोमचन्दभाई शाह** का 76 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया है। श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की समस्त गतिविधियों में आपका एवं आपके परिवार का सदैव महत्त्वपूर्ण सहयोग रहता था। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के समय तो आप सपरिवार जयपुर आये ही थे इसके बाद भी आप अनेक बार स्मारक भवन पधारे। साहित्य के प्रचार-प्रसार की आपकी तीव्र भावना रहती थी। आप उसके लिये सदैव प्रयासरत भी थे।

3. कलकत्ता निवासी श्री रतनलालजी पाटोदी का स्वर्गवास विगत माह में हो गया है। आप सरल स्वभावी एवं स्वाध्यायी थे। श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा मई माह में संचालित प्रशिक्षण शिविर के आप संरक्षक थे। आपकी स्मृति में प्रशिक्षण शिविर के दौरान 25 मई 2003 को टोडरमल स्मारक भवन में शोक सभा आयोजित की गई।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल कामना है।

सम्पादकीय –

हरिवंश कथा 32

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

मुनिराज ने पूछा ह्न ''हे चारुदत्त! यह समुद्र से घिरा कुम्भकंटक नामक द्वीप है। यहाँ तुम कैसे आये?''

मुनिश्री के पूछने पर मैंने वहाँ पहुँचने की आप बीती पूरी कथा कह सुनाई। उसी समय उन विद्याधर मुनिराज के दोनों पुत्र आकाश से नीचे उतरे और उनकी वंदना की।

मुनिराज ने दोनों पुत्रों को सम्बोधते हुए कहा ह्न 'हे कुमारो! जिसका मैंने पहले परिचय दिया था, यह वही तुम्हारा धर्म भाई चारुदत्त है।'

चारुदत्त ने आगे कहा ह्न उसी समय दो देव विमान से उतर कर आये और उन्होंने पहले मुझे और बाद में मुनिराज को नमस्कार किया। विद्याधर कुमारों ने इस अक्रम का कारण पूछा ह्न हे देवों! तुमने पहले श्रावक को और बाद में मुनि को नमस्कार क्यों किया?

प्रथम देव ने इसका कारण बताते हुए कहा ह्न ''चारुदत्त ने हम दोनों को पूर्वपर्याय में णमोकार महामंत्र दिया एवं जिनधर्म का उपदेश दिया था, फलस्वरूप मैं बकरे की पशु पर्याय से देव पर्याय को प्राप्त हुआ हूँ और यह मनुष्य से देव हुआ है। इसकारण ये हमारे साक्षात् गुरु हैं एवं इनका हम पर महान उपकार है।''

दूसरे देव ने कहा ह्न ''मैं एक परिव्राजक रूप धारी धोखेबाज के द्वारा रसायन के प्रलोभन में जिस रसकूप में गिरा दिया था, कालान्तर में उसी प्रकार की घटना से ये चारुदत्त भी उसी रसकूप में आ पड़े थे और मुझे मरणासन्न देख इन्होंने मुझे जिनधर्म का रहस्य समझाया था, जिससे मैंने जिनेन्द्र का स्मरण करते हुए समाधिपूर्वक प्राण त्यागे और मैं सौधर्म स्वर्ग में देव हुआ हूँ। इसतरह चारुदत्त मेरे भी साक्षात् गुरु हैं।''

इन घटनाओं से यह सिद्ध होता है कि जो पापरूपी कुएँ में और दु:खद संसार सागर में डूबे हुए मनुष्यों के लिए धर्मरूपी हाथ का सहारा देता है, उसके समान संसार में परोपकारी और कौन हो सकता है? सचमुच यह ही परम उपकार है। ऐसा ही उपकार तीर्थंकर और गणधर देव भी करते हैं।

''लोक में एक अक्षर, आधे पद अथवा एक पद का ज्ञानदान देनेवाले गुरु को जो भूल जाता है, वह भी जब कृतघ्न है, पापी है तो धर्मोपदेश के दाता को भूलजाने वाले कृतघ्नियों का तो कहना ही क्या है ? नीति कहती है कि ह्न ''नहि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति ह्न किए हुए उपकार को सज्जन कभी भूलते नहीं हैं।'' उपकारी व्यक्ति की कृतकृत्यता प्रत्युपकार से ही होती है।

तात्पर्य यह है कि अपना उपकार करनेवाले व्यक्ति का अवसर आने पर प्रत्युपकार किया जावे। यदि कदाचित् उपकार करने की सामर्थ्य न हो तो उपकारी के प्रति विनम्र व्यवहार के साथ कृतज्ञता ज्ञापन तो करना ही चाहिए।''

ऐसा कहकर ह्न दोनों देवों ने मेरा यथाशक्ति भरपूर आदर-सम्मान कर अपने योग्य सेवा करने एवं आपत्तिकाल में स्मरण करने को कहा और वे अपने स्थान को चले गये।

चारुदत्त ने अपनी आत्मकथा को आगे बढ़ाते हुए कहा ह्न देवों के चले जाने पर मैंने भी मुनिराज को नमन किया और मैं विद्याधरों के साथ शिवमन्दिर नामक नगर में गया और वहाँ सुख से रहने लगा।

एक दिन वे दोनों विद्याधर कुमार अपनी माता के साथ मेरे पास आये तथा मेरे लिए अपनी बहिन कुमारी गंधर्वसेना को दिखाकर मेरे साथ इसप्रकार सलाह करने लगे कि एकसमय राजा अमितगति ने अवधिज्ञानी मुनि से पूछा था कि ह्न आपके दिव्यज्ञान में मेरी पुत्री गान्धर्वसेना का पति कौन दिखाई देता है?

मुनिराज ने कहा था ह्न गान्धर्व विद्या का पण्डित यदुवंशी राजा ही इस कन्या को गन्धर्व विद्या में जीतेगा तथा वही इसका पति होगा। आपके आने से वह घोषणा सत्य साबित हो रही प्रतीत होती है।

राजा अमितगति तो इस समय मुनि हो गये हैं; परन्तु मुनि की घोषणा के अनुसार हमें भी आप ही प्रमाणभूत हैं। इसतरह कन्या गान्धर्व सेना मुझे सौंप दी गई। कन्या के दोनों भाई विद्याधरों की सेना के साथ तथा नाना रत्न और सुवर्ण आदि सम्पदा के साथ मेरे साथ चम्पानगरी आने के लिए तैयार हो गये। उसी समय अपने मित्र अमितगति का कार्य करने के लिए मैंने दोनों मित्र देवों का स्मरण किया।

स्मरण करते ही तत्काल निधियाँ हाथ में लिए हुए वे मेरे पास आ गये। वे दोनों देव गंधर्वसेना के साथ मुझे सुन्दर हंस विमान में बैठाकर आश्चर्य उत्पन्न करनेवाली सम्पदा सहित चम्पानगरी ले आये। यहाँ आकर अक्षय निधियों के द्वारा उन्होंने मेरी सब व्यवस्था कर दी। तदनन्तर दोनों देव स्वर्ग चले गये और दोनों विद्याधर भी अपने स्थान पर गये। मैं अपने मामा, माता, पत्नी तथा अन्य बन्धुवर्ग से बड़े आदर से मिला। सबको संतोष हुआ और मैंने भी बहुत सुख का अनुभव किया।

'वैश्या पुत्री बसन्तसेना अपनी माँ का घर त्यागकर मेरी अनुपस्थिति में भी सास की सेवा करती रही तथा अणुव्रतों से विभूषित हो गई।' ह्न यह जानकर मैंने उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकृत कर लिया, अपना लिया। मैंने दीन व अनाथ लोगों को किमिच्छक दान दिया और समस्त कुटुम्बीजनों के लिए भी उनकी इच्छानुसार वस्तुएँ दीं।'' **(क्रमश:)**

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

15

जो काम-क्रोधादि कषायभाव ज्ञान में प्रकाशित होते हैं, वे वास्तव में रागादि को प्रकाशित नहीं करते; क्योंकि रागादि ज्ञान से तन्मय नहीं हुए हैं; किन्तु रागादि सम्बन्धी ज्ञान अपने ज्ञान को प्रकाशता है। चैतन्य स्वयं प्रकाशस्वभावी होने से पर सम्बन्धी अपने ज्ञान को प्रकाशित करता है। वह पर को प्रकाशित नहीं करता। व्यवहारनय से आत्मा पर को प्रकाशित करता है; किन्तु वास्तव में तो वह पर सम्बन्धी अपने ज्ञान को ही प्रकाशित करता है। जगत की सब वस्तुएँ ज्ञानप्रकाश में प्रविष्ट नहीं होती और ज्ञानप्रकाश जगत की वस्तुओं में प्रवेश नहीं करता। जगत की वस्तुओं संबन्धी अपनी परप्रकाशता ज्ञानप्रकाशता को ही प्रकाशती है। इससे सिद्ध हुआ कि बन्धस्वरूप रागादि के और प्रकाशस्वरूप ज्ञान के लक्षण भिन्न होने से उनमें एकता नहीं है। उन दोनों के स्वलक्षण भिन्न-भिन्न जानकर भगवती प्रज्ञाछैनी को उन दोनों की अंतरंग संधि में पटकने अर्थात् ज्ञान को अन्तरोन्मुख करने पर राग से भिन्न चैतन्य के अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव होता है।

जिसे सम्यग्दर्शन हुआ, वह तो भगवान हो गया। जिसे ऐसा श्रद्धान हुआ कि मैं राग का कर्ता नहीं हूँ, पर का कर्ता नहीं हूँ, मैं तो सर्वज्ञ हूँ, वह तो सर्वज्ञ हो गया। व्यवहार रत्नत्रय का स्वामी पुद्गल है। जिस भाव से तीर्थंकर गोत्र का बन्ध होता है, उस भाव का स्वामी भी पुद्गल ही है, मैं नहीं - ऐसा निर्णय करने योग्य है।

दया-दान-पूजा-भक्ति, शास्त्र पठन, श्रवण आदि के शुभभाव तथा स्त्री-पुत्र खान-पान आदि के अशुभभाव उन सर्व भावों से आत्मा त्रिकाल रहित होने पर भी उनसे युक्त मानना वही संसार में भटकने का - नरक-निगोद का महाबीज है।

अपनी महिमा कर, अन्य सबकी महिमा छोड़ - ऐसा कहा जाता है; परन्तु मैं शुद्ध हूँ, परिपूर्ण हूँ - ऐसी महिमा आये, वह भी विकल्पात्मक महिमा है। वास्तव में तो स्वसन्मुख होकर अन्तरोन्मुख होना ही सच्ची महिमा है।

जिसप्रकार तेल पानी के प्रवाह में ऊपर ही ऊपर तैरता है, पानी के दल में प्रविष्ट नहीं होता; उसीप्रकार विकार चैतन्य के प्रवाह में ऊपर ही ऊपर तैरता है, चैतन्य के दल में प्रविष्ट नहीं होता।

तत्त्वानुशासन के 162 वें श्लोक में कहा है कि 'स्व-पर प्रतिभास स्वरूप आत्मा का स्वभाव है।' लेकिन स्वयं को ऐसे अचिन्त्य स्वभाववाला न मानकर मैं रोगी, मैं काला, मैं सुंदर, मैं धनवान - इसप्रकार परपदार्थो में और विभाव में अपनी मस्ती मानना, वह आत्मा को कलंक है।

श्रद्धान में विपरीतता होने से सम्यक्त्व रूकता है - होता नहीं है और पुरुषार्थ की अशक्ति से चारित्र अटकता है - प्रगट नहीं होता; तथापि सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं होने में जो श्रद्धान की विपरीतता के बदले पुरुषार्थ की कमजोरी मानता है, वह तो पहाड़ जितने महान दोष को राई के समान अल्प जानता है, वह पहाड़ जितने महान दोष को कैसे टाल सकेगा ?

बुध पुरुषों को अर्थात् सम्यग्दृष्टि जीवों को ऐसा निर्णय वर्तता है कि सिद्धदशा या संसारी दशा हमारे त्रैकालिक द्रव्यस्वभाव में नहीं है। ध्रवस्वरूप, सामान्यस्वरूप, एकस्वरूप वस्तु जो कि सम्यग्दर्शन का विषय है, उसमें मोक्ष की या संसार की दशा है ही नहीं। अन्त:तत्त्वरूप परमात्मतत्त्व ऐसा जो परमपारिणामिक तत्त्व, उसमें केवलज्ञान की पर्याय या संसार की विकारी पर्याय है ही नहीं।

स्व-पर को जानने की योग्यता पर्याय की अपनी योग्यता है; इसलिये उसे जाने तब ज्ञेय उसमें ज्ञात हुए ऐसा निकटता के कारण कहा जाता है। ज्ञान की एक समय की पर्याय अनन्त द्रव्य को जानती है और पर्याय में अनन्त द्रव्य ज्ञात होने योग्य हैं - ऐसा कहना वह भी व्यवहार है। वास्तव में तो ज्ञान की एक समय की पर्याय स्वज्ञेय ऐसे निजात्मा को जाने वहाँ अनन्त परज्ञेय उसमें ज्ञात हों - ऐसी उस पर्याय की शक्ति है।

प्रभु ! तू कौन है उसकी तुझे खबर नहीं है। तुम्हारे अनन्त वैभव का वर्णन तो सर्वज्ञदेव स्वयं अपनी वाणी में नहीं कर सके, तू इतना महान तत्त्व है। ज्ञायकभाव शुभाशुभरूप नहीं हुआ है; इसलिये वहाँ दृष्टि करने पर तू स्वयं अपने को प्राप्त कर लेगा।

कोई भी पर्याय हो, चाहे केवलज्ञान की हो या फिर मोक्ष की पर्याय हो; किन्तु उसका काल एक समय का होने से वह नष्ट होने योग्य है। समस्त पर्यायें नष्ट होने योग्य ही हैं। संवर की पर्याय हो वह भी नष्ट होने योग्य है; क्यों कि वह भी एक समय की पर्याय है न ! परन्तु त्रैकालिक तत्त्व तो जैसा है, वह सदा वैसा ही रहता है। अत: समस्त नाशवान भावों से ध्रुव सामान्य वस्तु भिन्न है। सह्यांचल और विंध्याचल पर्वतों की भांति भिन्न-भिन्न क्षेत्र हो - ऐसा नहीं है; परन्तु पर्याय में ध्रुव नहीं है और ध्रुव में पर्याय नहीं है। इसलिये नाशवान भावों से ध्रुव सामान्य वस्तु दूर है।

कारणपरमात्मा ही वास्तव में आत्मा है। पर्याय को अभूतार्थ कहकर - व्यवहार कहकर उसे अनात्मा कहा है। कारणपरमात्मा प्रभु उपादेय है। अति आसन्न भव्यों को ऐसे निज कारणपरमात्मा के सिवा अन्य कोई उपादेय नहीं है। पर्याय, राग या निमित्त कोई भी उपादेय नहीं है। निज परमात्मा को जिस पर्याय ने उपादेय किया, उस पर्याय को भी आत्मा नहीं करता। अमितगति आचार्यदेव के 'योगसार' में आता है कि पर्याय का दाता द्रव्य नहीं है; क्योंकि पर्याय सत् है और पर्याय को और सत् को किसी हेतु की आवश्यकता नहीं है। इसलिये सम्यग्दर्शन की पर्याय स्व का आश्रय लेती है, वह अपनी सामर्थ्य से है। आत्मा की सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की पर्याय भी स्वसामर्थ्य से है। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए निज परमात्मा के सिवा अन्य कुछ भी उपादेय नहीं है। **(क्रमश:)**

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2002-03

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 18 जुलाई 2003	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
शनिवार 19 जुलाई 2003	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग2(प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष) 10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 21 जुलाई 2003	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट -

(1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

फैडरेशन के चुनाव सम्पन्न

जबलपुर (म. प्र.): अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा जबलपुर के द्विवार्षिक चुनाव पण्डित राजेन्द्रकुमारजी की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुए। इसमें सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारियों का चयन निर्विरोधरूप से किया गया।

संरक्षक -पण्डित श्री राजेन्द्रकुमारजी, श्री अशोककुमारजी। अध्यक्ष - श्री विराग जैन शास्त्री, मंत्री - श्री मनोज जैन, सहमंत्री - श्री रजनेश जैन, उपाध्यक्ष - श्री सुशील जैन, कोषाध्यक्ष - प्रशांत जैन, संगठन मंत्री - श्री शरद जैन, श्री प्रशांत जैन, सांस्कृतिक मंत्री - श्री श्रेयांस शास्त्री, पर्यटन मंत्री - श्री पवन जैन (मारबल), प्रचार मंत्री - श्री अजीत जैन, श्री अभिषेक जैन, प्रकाशन मंत्री - श्री आतम जैन।

पण्डित राजेन्द्रकुमारजी ने सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए फैडरेशन के उद्देश्यों के अनुसार रचनात्मक कार्य करने एवं अनुशासन पूर्वक धार्मिक गतिविधियों में उत्साहपूर्वक सहभागिता करने की प्रेरणा दी।

नवगठित कार्यकारिणी ने महावीर जयन्ती समारोह को नवीन ढंग से मनाकर अपनी सक्रियता का परिचय दिया।

उद्घाटन समारोह सानन्द सम्पन्न

खड़ैरी (म.प्र.): आध्यात्मनगरी खड़ैरी में दिनांक 5 मई से 7 मई 2003 तक नूतन स्वाध्याय भवन का उद्घाटन एवं पंचपरमेष्ठी विधान सानन्द सम्पन्न हुआ।

समारोह में अध्यात्म प्रवक्ता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिंदवाड़ा, पण्डित कपूरचंदजी करेली, पण्डित निर्मलकुमारजी सागर, पण्डित रूपचंदजी बंडा एवं स्थानीय विद्वानों के प्रवचनों का लाभ को मिला।

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन खड़ैरी की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंचित किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित चिन्मयकुमारजी शास्त्री पिड़ावा एवं पण्डित मनीषकुमारजी सिद्धान्त खड़ैरी द्वारा सम्पन्न कराये गये।

- मनीष कहान

स्वयंभू पुरस्कार - 2003

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर के वर्ष-2003 के स्वयंभू पुरस्कार के लिये अपभ्रंश से संबंधित विषय पर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में रचित रचनाओं की चार प्रतियाँ 30 सितम्बर, 2003 तक आमंत्रित हैं। इस पुरस्कार में 21,000/- एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। 31 दिसम्बर 1997 से पूर्व प्रकाशित तथा पहले पुरस्कृत कृतियाँ सम्मिलित नहीं की जायेंगी।

यह सूचित करते हुये हर्ष है कि वर्ष 2002 का स्वयंभू पुरस्कार डॉ. कस्तूरचन्द जैन सुमन, श्री महावीरजी को उनकी कृति मइंकलेहा कहा पर दिनांक 17 अप्रेल 2003 को श्री महावीरजी में वार्षिक मेले के अवसर पर प्रदान किया गया।

नियमावली तथा आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त करने के लिये अकादमी कार्यालय, दिग. जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-4 से पत्र व्यवहार करें।

- डॉ. कमलचन्द सौगाणी

चल शिक्षण शिविर सम्पन्न

आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति द्वारा आयोजित चल शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 1 जून से 7 जून तक अनेक स्थानों पर विशाल धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

1. बरहन : यहाँ इस अवसर पर पण्डित गजेन्द्र शास्त्री बड़ामलहरा एवं पण्डित अनन्तवीर शास्त्री फिरोजाबाद के माध्यम से जिज्ञासुओं ने तत्त्वज्ञान का लाभ लिया।

इस अवसर पर 200 भाई-बहन उपस्थित थे। श्रुतपंचमी के अवसर पर जिनवाणी सार संभाल कार्यक्रम रखा गया, जिसमें सैकड़ों ग्रन्थों को सुरक्षित करके रखा गया। **ह्न पदमकुमार जैन**

2. अलीगंज : यहाँ चल शिक्षण समिति द्वारा बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित अनुराग शास्त्री फिरोजाबाद के प्रवचनों एवं कक्षाओं द्वारा बालकों को तत्त्वज्ञान कराया गया। अन्त में परीक्षा ली गई तथा उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पुरस्कार व प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। **ह्न डॉ. योगेश जैन**

3. जसवंतनगर : यहाँ शिविर के अवसर पर नवलब्धी विधान का आयोजन किया गया। शिविर में कक्षाओं और प्रवचनों के माध्यम से 200 मुमुक्षु भाई-बहन व लगभग 100 बालक लाभान्वित हुये। शिक्षण कक्षायें पण्डित अभिनय शास्त्री जबलपुर, पण्डित विपिन शास्त्री फिरोजाबाद एवं पण्डित आश्विन शास्त्री नोगांमा द्वारा ली गई। श्रुतपंचमी पर्व पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। **ह्न धनेशचन्द्र जैन**

4. सैमरा : यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति द्वारा आयोजित चल शिक्षण शिविर के अन्तर्गत 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रम पण्डित वीरेन्द्रवीर शास्त्री फिरोजाबाद के निर्देशन में सम्पन्न हुए। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित अरहन्तवीर जैन फिरोजाबाद ने सम्पन्न कराये। **ह्न विपिन जैन**

वेदी प्रतिष्ठा सानन्द सम्पन्न

बैंगलोर (कर्नाटक): यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैनमंदिर में दिनांक 13 से 15 अप्रैल तक त्रि-दिवसीय वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ; जिसमें समाज के 300-400 लोगों ने भाग लिया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित किशोरजी शास्त्री बैंगलोर एवं पण्डित अभिनय शास्त्री जबलपुर द्वारा सम्पन्न कराये गये।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इन्द्रसभा का विशेष कार्यक्रम काफी सराहा गया एवं 27 फीट का पालना झूलन का कार्यक्रम भी सबके आकर्षण का केन्द्र रहा। **- भबूतमल भण्डारी**

पंचम बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

देवलाली (महा.) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जवेरी बाजार मुम्बई की ओर से पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली में पंचम आध्यात्मिक बाल संस्कार शिविर का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें मुम्बई तथा आस-पास के अन्य अनेकों स्थानों से लगभग 350 बच्चों ने भाग लेकर परीक्षायें उत्तीर्ण कीं।

शिविर में पण्डित बाबूभाई मेहता, पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विरागकुमारजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली, पण्डित प्रवेशकुमारजी शास्त्री करेली, विदुषी जयति जैन तथा स्थानीय विदुषी बहिनों के माध्यम से विशेष सामूहिक कक्षा के अतिरिक्त बालबोध पाठमाला भाग - 1, 2, 3 तथा वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग - 1, 2 की कक्षायें चलाई गई।

प्रतिदिन रात्रि में पण्डित संजयजी शास्त्री द्वारा कराया गया पौराणिक कथा का कार्यक्रम विशेष सराहा गया। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन पूज्य गुरुदेवश्री के टेप प्रवचन, पूजन प्रशिक्षण तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

समापन के अवसर पर श्री मुकुन्दभाई खारा, ब्र. बसन्तभाई दोशी, श्री बीनूभाई शाह, उपस्थित विद्वानों एवं छात्रों ने शिविर के प्रति अपने उद्‌गार व्यक्त किये। तथा शिविर को प्रतिवर्ष आयोजित करने की भावना व्यक्त की।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

खतौली (मु.नगर) : यहाँ दिनांक 14 से 16 मई 2003 तक श्री 1008 जिनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा एवं शिखर कलशारोहण महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी एवं श्री प्रकाशचन्दजी सकारिया 'ज्योर्तिविद' मैनपुरी के समयसार परमागम पर सारगर्भित प्रवचनों को लाभ मिला। पण्डित सुबोधजी शाहगढ़ एवं पण्डित ज्ञायकजी राजकोट द्वारा बालकक्षा का विशेष आयोजन किया गया।

भगवान महावीर पंचकल्याणक विधान एवं याग मण्डत विधान सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुबोधकुमारजी शाहगढ़, पण्डित महेन्द्रकुमारजी इन्दौर, पण्डित संदीपकुमारजी शास्त्री छतरपुर एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

रात्रि में इन्द्रसभा, माता एवं अष्ट देवियों की चर्चा आदि की सुन्दर प्रस्तुति की गई। आयोजन में पण्डित सोनू शास्त्री एवं पण्डित कल्पेन्द्रजी का विशेष सहयोग रहा।

इस अवसर पर 4 हजार रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा। महोत्सव समिति की ओर से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 7100/- रुपये दान राशि एवं 6 हजार 500 रुपये जिनवाणी की कीमत कम करने हेतु प्रदान किये गये। **- अशोककुमार जैन**

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 69

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

हम जो तुमसे यह कह रहे हैं कि मत मारो, वह इसलिए नहीं कह रहे हैं कि तुम इसे मार सकते हो, उस पर दया करो; बल्कि तुम अपने पर दया करो, इसके लिए कह रहे हैं। यदि तुम्हें नरक में नहीं जाना हो तो तुम मारने का भाव मत करो; क्योंकि मार तो सकते ही नहीं हो।

बड़े दुःख की बात है कि जिनवाणी में ऐसे व्यवहार वचन आते हैं कि तुम मारो मत, तुम बचाओ, तुम सुखी करो; तब यह समझ लेता है कि मुझे मारने का अधिकार है, मैं बचा सकता हूँ, मैं सुखी कर सकता हूँ। अरे भाई ! यह कर सकने वाला उपदेश नहीं है। यह तो चरणानुयोग की भाषा का उपदेश है, इसका अर्थ है कि तुम मारने का अभिप्राय मत करो, नहीं तो तुम्हें भयंकर कर्मबंध होगा।

अपने यहाँ शास्त्रों में एक उदाहरण आता है कि एक बहुत बड़ा 1000 योजन का मत्स्य स्वयंभूरमण समुद्र में होता है और उसके कान में एक चावल के बराबर छोटा तंदुल मत्स्य होता है। वह बड़ा मत्स्य मुँह खोल देता है तो सैकड़ों मछलियाँ उसके मुँह में आती हैं और जाती हैं।

वह कान में बैठा तंदुल मत्स्य सोचता है – यह कैसा मूर्ख है। इसके मुँह में इतनी मछलियाँ आ गई हैं। यदि यह एक बार मुँह दबा लेता तो सारी पेट में चली जातीं और इसका पेट भर जाता, पर ये सब तो बाहर निकल रही हैं। यदि मैं इसके स्थान पर होता तो एक को भी नहीं छोड़ता। यद्यपि वह एक भी मछली को नहीं खा सकता है; क्योंकि वह तो उसके कान में बंद है; तथापि वह अपने इन परिणामों के कारण सातवें नरक में जाता है।

अब आप ही बताओ वह किस कारण नरक गया, मछलियों के मरने से, मछलियों के मारने के भाव से या मार सकता हूँ – इस अभिप्राय से।

तब फिर मारो मत – यह क्यों कहा जाता है ? इस शंका के समाधान के लिए गाथा नं. 265 में आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं–

यद्यपि जीवों के जो अध्यवसान होते हैं, वे वस्तु के अवलम्बन पूर्वक ही होते हैं; तथापि वस्तु से बंध नहीं होता, अध्यवसान से बंध होता है।

किसी को गुस्सा आता है तो वह हवा में नहीं आता। यदि कोई ऐसा कहे कि मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है ? यदि पूछें कि किस पर। वह कहे कि किसी पर नहीं, बस ऐसे ही।

पर भाई ! ऐसा नहीं होता। जो व्यक्ति उस वक्त ज्ञान का ज्ञेय होगा, उसके लक्ष्य से गुस्सा आयेगा। क्रोध जब आयेगा तो किसी न किसी वस्तु के आधार से ही आता है।

यदि लोभ होता है तो वह भी पैसे का, स्त्री का, पुत्र का, मकान का, जायदाद का, यश का, किसी न किसी का होता है; ऐसा नहीं होता कि वैसे ही लोभ हो रहा हो।

अध्यवसान भाव वस्तु को लक्ष्य करके होते हैं, परन्तु उन वस्तुओं से बंध नहीं होता, जिन वस्तुओं को लक्ष्य करके अध्यवसान भाव होते हैं, बल्कि अध्यवसानभावों से बंध होता है।

उन अध्यवसान भावों को छुड़ाने के लिए ऐसा कहते हैं कि वस्तु को छोड़ो, रुपए–पैसे को छोड़ो। रुपये–पैसे का लोभ छोड़ो, ऐसा नहीं कहा जाता है; फिर भी उसका अर्थ यही होता है कि रुपये–पैसे का लोभ छोड़ो।

माफ कर दो – इसका अर्थ है तू अपने को माफ कर दे अर्थात् उसके लक्ष्य से जो गुस्सा तुझे आ रहा है, उसे छोड़ दे; क्योंकि यदि तू उसे माफ नहीं भी करे तो भी तू उसका कुछ नहीं कर सकता।

इसीप्रकार के भाव को स्पष्ट करनेवाला निम्नांकित छन्द दृष्टव्य है –

तुष्टो हि राजा यदि सेवकेभ्यः,
भाग्यात्परं नैव ददाति किंचित्।
अहर्निशं वर्षति वारिवाहा,
तथापि पत्राः त्रितयः पलाशः।।

चाहे दिन रात भी बरसात हो, तो भी ढाक के पत्ते एक डाली में तीन ही होंगे, पाँच पत्ते होनेवाले नहीं हैं। यदि दिन और रात भी तुम सेवा करो और राजा तुमसे सन्तुष्ट हो जाय तो भी जो तुम्हें वह देगा वह भाग्य से अधिक नहीं हो सकता। तुम्हारे भाग्य में जितना होगा, वह तुम्हें उतना ही देगा।

आप भी यदि चपरासी से खुश होते हो तो उसे 500 रुपये का इनाम देते हो और यदि क्लर्क से खुश हो तो 5000 रुपये का इनाम देते हो। यदि साहब से खुश होते हो तो एक लाख रुपये देते हो।

जैसी उसकी हैसियत होती है, उसके हिसाब से तुम्हें देने का भाव आता है।

जैसा उसके पुण्य का उदय है, उसके अनुसार उसे देने का भाव आता है। इसका मतलब है कि तुमने कुछ नहीं दिया।

चरणानुयोग की भाषा ही ऐसी होती है कि मारो मत, सताओ मत, दुःखी मत करो, परोपकार करो; लेकिन उसका अर्थ यही होता है कि उसके लक्ष्य से तुम खोटे भाव मत करो, उससे तुम्हें कर्मबंध होगा।

यदि किसी से कहे कि साहब ! आपको जरूर पधारना पड़ेगा, आपके पधारने से हमारे शिविर की शोभा होगी तो एक मिनिट में उनके तेवर बदल जाते हैं और वे कहते हैं कि मुझे अध्यक्ष बनना है या मुख्य अतिथि ? वे सोचते हैं कि यदि मेरे से उनकी शोभा होती है तो उसका कुछ हिस्सा मुझे भी मिलना चाहिए, उसे वसूली करने का भाव आरंभ हो जाता है।

यदि किसी विद्वान से कहें कि आप पधारो, आपका व्याख्यान सुनने के लिए हजारों लोग आते हैं; आप नहीं आयेंगे

तो हमारा यह शिविर बिगड़ जायेगा, तो एक मिनिट में वे भगवान बन जाते हैं।

यदि साथ में हम यह भी कह दें कि असली बात तो यह है कि आप नहीं भी आवेंगे तो भी एक आदमी कम होनेवाला नहीं है और जो आयें है, उन्होंने तो ये पूँछा भी नहीं कि कौन–कौन विद्वान आ रहे हैं ? एक बच्चे ने भी यह नहीं पूँछा कि वे क्यों नहीं आये, कब आयेंगे या नहीं आवेंगे ? इतना सुनते ही वे ठंडे पड़ जाते हैं।

अनादिकाल का जो अज्ञान है, उसका नशा इस जीव को बहुत तेजी से चढ़ता है। इस अधिकार की ये गाथाएँ उस नशा को उतारने वाली हैं।

परवस्तु को लक्ष्य करके विकारी भाव होता है, परवस्तु को आधार करके ही मिथ्या मान्यता होती है कि मैं दूसरों को सुखी–दुखी कर सकता हूँ या मार–जिला सकता हूँ; यही कारण है कि वस्तु के त्याग करने की बात कही जाती है। वास्तव में त्याग तो अध्यवसान भावों का ही होता है।

समयसार के अंत में 47 शक्तियों का प्रकरण आयेगा, उसमें एक त्यागोपादानशून्यत्वशक्ति है, जिसका अर्थ है कि भगवान आत्मा किसी को छोड़े या किसी को ग्रहण करे – ऐसी शक्ति से शून्य है अर्थात् किसी को ग्रहण नहीं कर सकता और किसी को छोड़ भी नहीं सकता। जब ग्रहण ही नहीं किया तो छोड़ेगा क्या ?

कोई कहे कि मैंने 10 लाख रुपये छोड़ दिए ?

पूछा कैसे, तो कहता है कि वह बेईमान है, मेरे रुपये खा गया, वह देता ही नहीं है, मैंने बहुत कोशिश कर ली, धमका लिया; लेकिन देता ही नहीं है; इसलिए मैंने छोड़ दिए।

अरे भाई ! तूने क्या छोड़े। पूरी कोशिश कर ली है न !

तुम किसी को ग्रहण नहीं कर सकते हो और छोड़ भी नहीं सकते हो ? किसी का कुछ कर नहीं सकते हो ? यही वस्तु का स्वरूप है; लेकिन जितने भी खोटे भाव होते हैं, वे सब परवस्तु, के लक्ष्य से होते हैं। जब हम कहते हैं कि उसे छोड़ दो, तो वास्तव में तो उसके लक्ष्य को छुड़ाना। उसमें कुछ करने की मान्यता को छुड़ाने का यह उपदेश है।

गहराई में जाकर यदि विचार करें तो एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता ही नहीं है और यही बात जिनेन्द्र भगवान ने कही है–

इसी बात को अमितगति आचार्य ने सामायिक पाठ में भी कहा है –

स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीयं लभते शुभाशुभम्।
परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयंकृतं कर्म निरर्थकं तदा।।30।।

शुभाशुभ कर्म जो हमने पहले किये हैं, उन्हीं का फल हम प्राप्त करते हैं; उपादान की दृष्टि से उसके कर्ता हम हैं। निमित्त की दृष्टि से हमारा पुराना बांधा हुआ कर्म का उदय है।

यदि हम ऐसा माने कि सुख और दुख कोई दूसरा हमें देता है, तो जो कर्म हमने स्वयं किए वो बेकार हो गये।

जरा कल्पना करो कि हम सारी जिन्दगी पुण्य करें और फिर भी हमें कोई दुःखी कर दे तो हमारे अच्छे भाव करने का क्या फायदा हुआ ? या हम सारी जिन्दगी खोटे भाव करें फिर भी हमें कोई सुखी कर दे तो हमें खोटे भाव करने से क्या नुकसान हुआ ?

ऐसी स्थिति में कोई भी आदमी अच्छे भाव करने की कोशिश क्यों करेगा और खोटे भाव करने से क्यों डरेगा ? फिर हम तुम्हारी सेवा करेंगे; क्योंकि जैसा तुम करोगे, वैसा होगा। हमारे अच्छे–बुरे कर्म करने से क्या होता है ?

जब हमने अच्छे कर्म किए हैं, तो हमें अच्छा फल मिलना ही चाहिए।

समझ लो कि मैंने अच्छी तरह पढ़ाई की है और परीक्षा की कॉपी में सारे प्रश्नों के सही उत्तर लिखे हैं और फिर भी मास्टरजी हमें फैल कर दें, तो पढ़ाई पढ़ने से क्या फायदा ? फिर तो मास्टरजी की सेवा करो, यही सबसे बढ़िया बात है न ?

यदि हम कॉपी खाली रख आए और कुछ भी पढ़ाई नहीं की और मास्टरजी हमें पास कर दें तो भी पढ़ने की क्या जरूरत है, मास्टरजी की सेवा करो।

आप कहे कि मास्टरजी की सेवा तो करना ही चाहिए।

अरे भाई ! करना तो चाहिए, लेकिन पास होने के लिए नहीं। पास होने के लिए तो पढ़ाई ही करना चाहिए।

किसी मास्टर को ये अधिकार नहीं दिया जा सकता कि विद्यार्थी कोरी कॉपी रख आये और वह पास कर दे तथा किसी मास्टर को ये अधिकार नहीं दिया जा सकता है कि वो पूरे प्रश्न का जबाब दे और वह उसे फैल कर दे। जितने प्रश्नों के उत्तर दिए, उनकी सही–सही जाँच करके उतने नम्बर देना ही उस मास्टर का कर्तव्य है। यदि वह ऐसा नहीं करता है ते वह बेईमान है। कम ज्यादा नम्बर देने का अधिकार उसे नहीं है।

इसीप्रकार जैसे मैंने कर्म किए, वैसा फल मिलना मेरा अधिकार है; यदि भगवान भी उसे बदल दे, तो वह मेरे अधिकार की सीमा का उल्लंघन करता है। यह वस्तुस्वरूप के विरुद्ध है और अन्याय भी है कि मैं जिन्दगी भर पुण्य करूँ और फिर भी कोई भगवान मुझे दुःखी कर दें।

यदि भगवान कुछ करते हैं तो महावीर भगवान ने राजा श्रेणिक को नरक में जाने से क्यों नहीं रोक लिया ? वह तो उनका सबसे प्यारा शिष्य था, श्रावकोत्तम था; श्रावकों में सबसे बड़ा शिष्य था। वे तीर्थंकर भगवान थे, अतुल्य बल के धनी थे। अनंतवीर्य के धनी थे; कर सकते थे तो कर देते उसका उद्धार।

यदि कहो कि उसने नरकगति, नरकायु बांध ली थी तो वह अपने कर्म के अनुसार ही हुआ न, अपनी पर्यायगत योग्यता के अनुसार ही हुआ न ? दुनिया की कोई ताकत किसी को बचा नहीं सकती है, मार नहीं सकती, सुखी–दुखी नहीं कर सकती – यही वस्तु का स्वरूप है। **(क्रमशः)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

कुमारी वीणा अजमेरा का नाम वर्ल्ड रिकार्ड में

भारत सरकार के नेशनल चाइल्ड अवार्ड से विभूषित बाल नृत्यांगना कु. वीणा अजमेरा, भीलवाड़ा ने नृत्य के क्षेत्र में भारत की सीमाओं को पार कर **लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड** में अपना नाम दर्ज कराकर ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की है। अर्न्तराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त लिम्बा बुक में पहली बार किसी बाल नृत्यांगना का नाम वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज होने से कला प्रेमियों को भारी हर्ष है।

संगीत नाटक अकादमी से पुरस्कृत, यूनेस्को फैडरेशन अवार्ड एवं हार्टकेयर फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया अवार्ड प्राप्त कु. वीणा जैन देश-विदेश में अपने प्रसिद्ध मंगलकलश नृत्य से अहिंसा, शाकाहार , पर्यावरण सुरक्षा एवं विश्वबंधुत्व के संदेश दे रही है। साथ ही वीणा जैन का 63 कलश लेकर किया जानेवाला नृत्य 63 अंक के समान समन्वय व एकजुटता को प्रदर्शित करता है।

हाल ही में वीणा जैन को उदयपुर से प्राप्त 1 लाख रुपये की पुरस्कार को उसके पितामह ने अकालग्रस्त गांवो में पानी के टेंकर्स हेतु भेंट देकर एक आदर्श उपस्थित किया है। इससे पूर्व भी वे 1 लाख रुपये गौशाला व चिकित्सालय में भेंट कर चुके हैं।

श्रुतपंचमी पर्व सानन्द सम्पन्न

खतौली (मु.नगर) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर पीसनोपाड़ा में श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर दिनांक 3 से 5 जून तक तीन लोक मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात: विधान के मध्य 8.30 से 9 बजे तक मुनि 108 श्री सम्यक्त्वभूषणजी महाराज का मांगलिक प्रवचन होता था, जिसमें मुनिश्री ने कहा कि जिनवाणी कहीं से भी प्रकाशित हो श्रावकों को पढ़ने योग्य है, उसका अविनय नहीं होना चाहिये।

प्रतिदिन दोपहर में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने पंच परावर्तन विषय पर कक्षा ली । सायंकाल भक्ति के पश्चात् प्रथम प्रवचन पण्डित अभिनवजी मोदी मैनपुरी तथा द्वितीय प्रवचन पण्डित संजीवजी गोधा का हुआ।

झण्डारोहण श्री नरेन्द्रकुमारजी सर्राफ ने किया तथा मंगल कलश श्री मुकेश जैन आढती परिवार द्वारा विराजमान किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री एवं पण्डित अभिनवजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराये गये।

रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये । सभी कार्यक्रमों में श्री कल्पेन्द्रजी का सराहनीय सहयोग रहा।**– अशोककुमार जैन**

जुलाई में आनेवाली तीर्थंकरों की पंचकल्याणक तिथियाँ

05 जुलाई – भगवान महावीरस्वामी का गर्भकल्याणक
06 जुलाई – भगवान नेमिनाथ का मोक्षकल्याणक
15 जुलाई – भगवान मुनिसुव्रतनाथ का गर्भकल्याणक
23 जुलाई – भगवान कुन्थुनाथ का गर्भकल्याणक
31 जुलाई – भगवान सुमतिनाथ का गर्भकल्याणक

चतुर्थ बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

जयपुर (मालवीयनगर-सैक्टर 7): यहाँ प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री नथमलजी झांझरी परिवार की ओर से दिनांक 1 से 15 जून 2003 तक चतुर्थ बाल संस्कार शिविर का सफल आयोजन किया गया।

शिविर में छहढाला सहित बालबोध पाठमाला भाग-1, 2, 3 की कक्षाओं का आयोजन किया गया, जिसमें सभी उम्र के लोगों ने सम्मिलित होकर धर्मलाभ लिया। शिविर में बच्चों का विशेष उत्साह रहा।

कक्षाओं के सफल संचालन एवं अध्यापन में श्रीमती राजकुमारी बेन सनावद, पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, युवा विद्वान राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना एवं सुश्री ऋचा जैन सनावद का विशेष सहयोग रहा।

अन्तिम दिन विद्यार्थियों की परीक्षा ली गई तथा पुरस्कार वितरित किये गये। शिविर के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई।

डाक टिकिट भेजकर सत्साहित्य नि:शुल्क मंगा लें

अध्यात्म जगत के आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजी स्वामी के प्रवचनों की शृंखला में आचार्य कुन्दकुन्द कृत ग्रंथाधिराज समयसार (गाथा 373 से 415) पर हुए प्रवचनों का संकलन **प्रवचनरत्नाकर भाग-10** (पृष्ठ- 258, कीमत 20/- रुपये) तथा पण्डित नेमीचन्दजी पाटनी द्वारा लिखित पुस्तक **भेदविज्ञान का यथार्थ प्रयोग** (पृष्ठ 28, कीमत 3/- रुपये) का साहित्य सैट श्री मगनमल सौभागमल पाटनी फैमिली चैरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई की ओर से मुनिराजों, ब्रह्मचारियों, मंदिरों, संस्थाओं एवं मुमुक्षुओं को स्वाध्यायार्थ नि:शुल्क भेंटस्वरूप भेजा जा रहा है।

इच्छुक महानुभाव डाकखर्च के लिए 5/- रुपये के फ्रेश डाक टिकिट भेजें । डाक टिकिट भेजने की अंतिम तिथि 31 अगस्त, 2003 है। **– प्रबन्धक, नि:शुल्क साहित्य वितरण विभाग**

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4 बापूनगर, जयपुर (राज.)

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जून (द्वितीय) 2003
J.P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127